|  |
| --- |
| 17. August 2025 |
| **20. Sonntag im Jahreskreis C** |
| Erste Lesung: Jer 38,4-6.8-10; Zweite Lesung: Hebr 12,1-4; Evangelium: Lk 12,49-53 |
|  |
| Aus pastoralen Gründen können auch die Perikopen der Tagesmesse vom 15. August, dem Hochfest Mariä Aufnahme |
| in den Himmel, genommen werden. |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 700 | Wie freue ich der Botschaft mich |
|  | GL 144, 1+4+5 | Nun jauchzt dem Herren alle Welt |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 157 | Herr, erbarme ich |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 715 | Es jubelt aller Engel Chor |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 40, 2-4. 18 |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 307, 5 | Meine Hilfe und mein Retter |
|  | oder |  |
|  | GL 365 | Meine Hoffnung und meine Freude |
|  | GL 424, 1+3 | Wer nur den lieben Gott lässt walten |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 4 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Meine Schafe hören auf meine Stimme;* |
|  | *ich kenne sie , und sie folgen mir.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 456, 1+2+4 | Herr, du bist mein Leben |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 702 | Herr, was im alten Bunde |
|  | GL 346, 1-3 | Atme in uns, Heiliger Geist |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 342, 2-4 | Komm, Tröster, der die Herzen lenkt |
|  | GL 351, 2+4 | Der du der Tröster wirst genannt |
|  | GL 357, 1+3! | Gieß sehr tief in mein Herz hinein |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 347, 1+4 | Der Geist des Herrn |
|  | GL 452, 1+4 | Der Herr wird dich mit seiner Güte |
|  | GL 464, 1-3 | Gott liebt diese Welt |